माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव

कमलेश यादव
शोधार्थी, शिक्षा संस्थान बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी
डॉ सुनील कुमार त्रिवेदी
सह. आचार्य, शिक्षा संस्थान बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

शोध सारांश

यह शोध पत्र माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के बस्ती जिला के अतंर्गत उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त चार माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया । चयनित विद्यालयों से कक्षा 10वीं (सत्र 2023–24) के 111 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का शोध अध्ययन करने हेतु केएस. मिश्रा द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण मापनी एवं . मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन हेत शोधकर्ता द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया। शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण हेत मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण एवं सह-सम्बन्ध का उपयोग किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकां श विद्यार्थियों के अनसार विद्यालयी वातावरण का स्तर औसत है और विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य का स्तर औसत है। जबकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव पाया गया एवं विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं साथ ही विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। वर्तमान शोध अध्ययन विद्यालयी वातावरण को प्रभावी बनाने एवंविद्यार्थियों के सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य हेतुविद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों एवं अन्य हितधारकों को उचित सझाव प्रदान करने में सहायक होगा।

मुख्य शब्द: मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यालयी वातावरण

शिक्षा, व्यक्तियों के जीवन के लिए ज्ञान, आदर्श, समझ, अनभु व और संपर्क की आवश्यकताओं को पर पूरा करने में सहायक है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, विकास एवं विशषेताओ के साथ जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। यह न केवल ज्ञान एवं कौशल का स्रोत है, अपित एक अच्छी शिक्षा आदर्श नागरिकता एवं समाज के साथ आदर्श समन्वयन स्थापित करने में सहायक होती है। इस हेत विद्यालयी वातावरण का सकारात्मक होना आवश्यक है, जहाँ विद्यार्थी शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया में संलग्न होकर अपने भविष्य के सपने संजो सके । अतः स्वस्थ विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के अनभुव एवं अधिगम को परिष्कृत करती है। विद्यालयी वातावरण के अतंर्गत अनेक अव्यय सम्मिलित होते हैं, जैसे— शिक्षक, साथी समह, शांत और सुरक्षित विद्यालय वातावरण, सुविधाजनक विद्यालयी इमारतें, विद्यार्थियों के लिए कक्षाकक्ष और अध्ययन के लिए महत्वपर्ण- सामग्री आदि। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में विभिन्न

कार्यक्रम, जैसे— खेलकूद-, प्रातःकालीन सभा, कला, नृत्य-संगीत, वादन आदि भी सम्मिलित हैं। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों को सबल, समर्पित एवं सफल बनाने में सहायक होता है।

'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023' में यह उल्लेख किया गया है कि विद्यार्थियों में समग्र सीखने का अनभुव न केवल पाठ्यक्रम सामग्री एवं शिक्षाशास्त्र में निहित है, बल्कि यह विद्यालयी वातावरण, अभ्यास एवं संस्कृति से भी निर्धारित होता है। शिक्षकों द्वारा अपनी भमिूकाओं को प्रभावी ढग से निभाने की क्षमता विकसित करने के लिए विद्यालयी सं स्कृति में परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। विद्यालय के सभी सदस्य(शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, प्रधानाध्यापक एवं अन्य सहायक कर्मचारी) यह सुनिश्चित करें कि विद्यालय में विद्यार्थी सुरक्षित और सहज अनभुव करें, वे सं ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ हों और सीखने की प्रक्रिया का आनंद लें। नेतृत्व के माध्यम से इस प्रकार से पोषित विद्यालयी वातावरण और संस्कृति को विकसित किया जा सकता है। इस संदर्भ में विद्यालयी वातावरण एवं कल्याण हेत परामर्श की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। यह विद्यालयी वातावरण संसाधनों, भावनाओ, विचारों, दृष्टियों, अनभुवों, संपर्क आदि का समग्र ढाँचा होता है, जो विद्यार्थियों के विकास और शिक्षण के लिए अत्यावश्यक है। विद्यालय का सकारात्मक वातावरण उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है, जो विद्यार्थियों को शिक्षा का महत्व समझने एवं उन्हें संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है। साथ ही, ऐसा वातावरण शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को उनके जीवन लक्ष्य तक पहुँचाने में सेतु का कार्य करता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन:

अग्रवाल, सत्तार और जैन(2020) के अनसुार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, विद्यालयी गतिविधियाँ तथा शालेय वातावरण के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। विद्यार्थियों के समग्र मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण में विद्यालयी शिक्षा की भमिू का को ध्यान में रखते हु ए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। जीवन लक्ष्य तक पहुँचने हेत अनेक अवयव कार्य करते हैं, जिनमें से एक मानसिक स्वास्थ्य है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के मानसिक तथा भावनात्मक स्थिति से सं बं धित होता है। यह उसकी व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की गणु वत्ता को प्रभावित करता है। विद्यार्थी जीवन में मानसिक स्वास्थ्य का अच्छा होना बहुत ही महत्वपर्णू होता है। यह उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को सकारात्मक और समर्थ बनाता है। साथ ही, अधिक उत्साही और सक्रिय जीवनशैली हेतु प्रोत्साहित करता है। यदि विद्यालय में अस्थिर, उदास या अधिक तनाव वाला वातावरण होता है तो विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थियों का ध्यान भटकता है एवं उनकी उपेक्षा की सं भावना होती है। इस प्रकार के वातावरण में विद्यार्थियों में चिंता, थकान एवं उदासीनता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। दसरी ओर, विद्यालय में सकारात्मक और उत्साही वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहु त लाभदायक होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनसुार विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास एवं प्रोत्साहन की पहल केवल विद्यालय के उत्साही सहयोग से ही सफल हो सकती है। राज्य, जिला, उपजिला और ब्लॉक स्तर पर विद्यालयों को इसे- गंभीरता से लेना होगा। साथ ही, विद्यालय परामर्श के द्वारा ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाए, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में बौद्धिक, व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक विकास को समर्थन प्राप्त हो।

शिक्षा मत्रालय, भारत सरकार द्वारा कोविड-19 के पश्चात विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण पर एक सर्वेक्षण किया गया था। इस सर्वेक्षण 'मेंटल हैल्थ एडं वैल बीइग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स 2022' के अनसुार विद्यालयी गतिविधि, मूल्य, अभ्यास एवं अतःक्रिया विद्यार्थियों के मानसिक एवं भावात्मक कल्याण हेत महत्वपर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही, विद्यालय जीवन में संतुष्टि भी मानसिक स्वास्थ्य को समर्थन प्रदान करती है। इसके अनसुार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अध्ययन, परीक्षा एवं उसके परिणामों को लेकर चिता होती है।

भारत सरकार द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेत कई पहलें की गई हैं, जिनमें से एक 'मनोदर्पण 2020' से संचालित किया जा रहा है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को मनोसामाजिक सहायता प्रदान की जाती है। 'मनोदर्पण' द्वारा विद्यार्थियों तक पहुँच बनाने हेतु संगोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। साथ ही, विद्यार्थियों की समस्याओं को टेलीकॉन्फ्रेंसिं ग के माध्यम से सलझु ाने का प्रयास किया जाता है। इसके द्वारा अनेक विषय, जैसे— विद्यार्थियों में जीवन कौशल, पारिवारिक एकजटुता, बच्चों के साथ गणुवत्तापर्णू समय बिताना आदि अनेक विषयों पर चर्चा, वीडियो आदि उपलब्ध हैं, जिससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में सहायता मिलती है। विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा इसका प्रभावी उपयोग मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेत सहायक सिद्ध होगा, इसलिए 'मनोदर्पण' आत्मनिर्भर भारत बनाने की एक सार्थक पहल है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अध्ययन, परीक्षा एवं उसके परिणाम को लेकर मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण के संदर्भ में 'परीक्षा पे चर्चा' एवं 'एक्जाम वारियर्स 2024' में सझाए गए मंत्र, जैसे— परीक्षा, अभिभावक, समह साथी के दबाव को कम करने के लिए विद्यार्थियों को क्रमबद्ध एवं समकालिक तरीके से अध्ययन में संलग्न होना चाहिए। इस दबाव को कम करने हेतु अभिभावकों को सहयोग, विद्यार्थियों में सकारात्मक एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ ही समदुाय में इस पर चर्चा की जानी चाहिए। विद्यालय एवं अभिभावकों के द्वारा विभिन्न रणनीतियों, जैसे— सकारात्मक अभिप्रेरणा, परामर्श, स्वास्थ्य अतःक्रिया आदि द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास करना अत्यावश्यक है।

मेहता और सिंह (2015) द्वारा किए गए शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शक्षिे क उपलब्धि का तलनुात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओ के मानसिक स्वास्थ्य एवंशक्षिे क उपलब्धि में सार्थक अतर है। उच्च, मध्यम एवं निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अतरं है एवं कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शक्षिे क उपलब्धि में धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध है। कला व विज्ञान के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शक्षिे क उपलब्धि में कोई संबंध नहीं है (शर्मा, सक्सेना और मीनाक्षी, 2019)। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक होना आवश्यक है। नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है

शोध अध्ययन का औचित्य

विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, जिससे उनकी उच्च शक्षिे क उपलब्धि होने की सं भावना बढ़ती है। बच्चों के जीवन का एक मुख्य अशं विद्यार्थी के रूप में व्यतीत होता है एवं उनका मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा कार्य को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भमिूका निभाता है। स्वस्थ विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में सकारात्मक विचारधारा विकसित करता है और यह उनकी अधिगम प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने में सहायक होता है। सकारात्मक वातावरण में रहने से विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है जो उन्हें आत्मविश्वास प्रदान कर उनके लिए एक स्थायी मंच तैयार करता है, जिस पर वे अपनी भमिूका उचित रूप से निभा सकते हैं।

विद्यालय का अस्थिर, उदास या तनावपूर्ण वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थियों का ध्यान भटकता है और उनकी उपेक्षा की संभावना होती है। इस तरह के वातावरण में विद्यार्थियों में चिंता, थकान और उदासीनता जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। दसरी ओर, विद्यालय में सकारात्मक और उत्साही वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहु त लाभकारी होता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 एवं 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' द्वारा प्रभावी एवं सकारात्मक विद्यालय संस्कृति , अभ्यास एवं अधिगम वातावरण पर बल दिया गया है। शोध साहित्यों की समीक्षा के उपरात ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य, उपलब्धि अभिप्रेरणा, शक्षिे क चिता एव इसके परस्पर सबंध के विषयों पर अनेक

शोध कार्यकिए गए हैं। किन्तु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालयी वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पर बहत कम शोध अध्ययन हुए हैं। इस प्रकार शोधकर्ता द्वारा इस शोध समस्या का चयन शोध अध्ययन हेतु किया गया। जो प्रभावी विद्यालयी वातावरण एव विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य हेत विद्यालय प्रशासकों, शिक्षकों एव अन्य हितधारकों को उचित अतःक्षेपण हेतु सुझाव प्रदान करने में सहायक होगा।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषाएँ:

विद्यालयी वातावरण— विद्यालयी वातावरण से तात्पर्य विद्यालयी वातावरण में विद्यमान उन शक्तियों से है, जो विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक योगदान करने की क्षमता रखती हैं। जहाँ शिक्षणअधिगम प्रक्रिया- स्वतः एवं स्वाभाविक हो एवं जहाँ शिक्षणअधिगम- प्रक्रिया में आए अवरोधों को शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के संयक्तु प्रयास से दूर किया जाता है। स्वस्थ विद्यालयी वातावरण के अतंर्गत विद्यालय के वातावरण की स्थिति, अध्यापकों का कक्षाकक्ष- अनभुव, विद्यालय की सुरक्षा , गरु- शिष्य संबंध आदि सम्मिलित हैं।

मानसिक स्वास्थ्य— मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ उस स्वास्थ्य से है, जिसका सं बं ध मानस या मन से होता है। मानसिक स्वास्थ्य में अवबोध, स्मरण, चेतना, विचार, तर्क, समस्या समाधान आदि शक्तियाँ आती हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ न होने के मख्य सकेत चिनता , उदासी, थकान, तनाव और दुःख आदि हैं। ये वे अव्यय हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी अपने विचारों एवं भावनाओ को संतुलित रखते हुए जीवन में सामजस्य स्थापित करते हैं।

माध्यमिक स्तर— माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 10वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह-संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शुन्य परिकल्पनाएं इस प्रकार हैं—

1. विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। 2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह-संबंध नहीं है। न्यादर्श शोध अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के बस्ती जिला के अतंर्गत उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त (2सरकारी विद्यालयों) एवं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त (2 गैर सरकारी) माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। चयनित विद्यालयों के कक्षा 10वीं (सत्र 2023-24) विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

तालिका 1— चयनित न्यादर्श का विवरण

क्रम	विद्यालय का नाम	विद्यालय का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या
1.	उच्च प्राथमिक विद्यालय, बेलवाडारी, बस्ती	सरकारी	30
2.	कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय, मिश्रोलिया, बस्ती	सरकारी	31
3.	जूनियर हाईस्कूल, आहरा , मुंडेरवा, बस्ती	गैर सरकारी	25
4.	कम्पोजिट उच्च प्राथनिक विद्यालय, ओडवारा, बस्ती	गैर सरकारी	25
		कुल	111

शोध विधि:

इस शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया था।

विद्यालयी वातावरण मापनी— माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के अध्ययन हेतु के.एस. मिश्रा (2012) द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में कुल 70 कथन हैं। इस उपकरण के छह आयाम हैं— रचनात्मक उद्दीपन, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकार, सहनशीलता, अस्वीकार एवं नियंत्रण। शोध उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेदन विधि द्वारा ज्ञात की गई, जिसका मान 0.968 है। शोध उपकरण की वैधता विषय विशषे ज्ञों द्वारा स्थापित की गई। इस प्रकार यह मापनी विषय-वास्तु एवं अंकित वैधता के आधार पर वैध मानी गई। विद्यालयी वातावरण मापनी में वस्तुनिष्ठ कथनों का प्रयोग किया गया, जिसमें सभी कथन सकारात्मक हैं। इस मापनी में कथनों का चयन करने के लिए पाँच विकल्प— हमेशा, प्रायः, कभीकभी-, बहुत मश्किुल से एवं कभी नहीं दिए गए हैं। इस तरह कुल 70 एकांश होने के कारण अकों का विस्तार अधिकतम 280 अकं तथा न्यूनतम 0 अक है।

मानसिक स्वास्थ्य मापनी- मानसिक स्वास्थ्य मापनी का निर्माण शोधकर्ता द्वारा जगदीश और ए. के. श्रीवास्तव (1995) द्वारा निर्मित मेंटल हेल्ब इन्वेंटरी को ध्यान में रखते हुए किया गया। शोधकर्ता द्वारा इस उपकरण को अनुकूलित करते हुए इसे माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु उपयुक्त बनाया गया। इस मापनी के अंतर्गत आयामों एवं कथनों को विद्यार्थियों की आयु के अनुकूल कर इसका उपयोग किया गया। इस मापनी में कुल छह आयाम थे-सकारात्मक आत्म-मूल्यांकन, वास्तविकता की धारणा, व्यक्तित्व का एकीकरण, स्वायत्तता, समूह उन्मुख दृष्टिकोण एवं पर्यावरण निपुणता। इस मापनी में कुल 56 कथन थे। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अनुसार अनुकूलित करने के उपरांत इस प्रश्नावली में कुल 45 प्रश्नों की रखा गया। शोध उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेदन विधि द्वारा ज्ञात की गई, जिसका मान 0.989 था। शोध उपकरण की वैधता विषय विशेषज्ञों द्वारा स्थापित की गई है। इस प्रकार यह मापनी विषयवस्तु एवं अंकित वैधता (कंटेंट एड वैलिडिटी) के आधार पर वैध मानी गई। मानसिक स्वास्थ्य मापनी में वस्तुनिष्ठ कथन का प्रयोग किया गया। इसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन थे। इस मापनी में कथनों का चयन करने के लिए चार

विकल्प रखे गए हमेशा, अधिकतर, कभी-कभी, कभी-नहीं। इस प्रकार कुल 45 एकांश होने के कारण अंकों का विस्तार अधिकतम 180 अंक तथा न्यूनतम 45 अंक है।

प्रदत्तों का संग्रहण

चयनित विद्यार्थियों पर विद्यालयी वातावरण मापनी इस शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श में एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी प्रशासित कर प्रदत्त संग्रहित किए गए।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) एवं सह-संबंध का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालयी वातावरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना प्रथम शोध उद्देश्य था।

प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण पर मापनी द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया, जिसे तालिका 2 में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है

तालिका 2 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का स्तर

विद्यालयी वातावरण	**विद्यार्थियों की संख्या**	**प्रतिशत** (%)
उच्च स्तर	15	13.52%
औसत स्तर	79	71.17%
निम्न स्तर	17	15.31%
कुल	111	100%

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के अध्ययन में सम्मिलित 111 विद्यार्थियों में से 15 (13.52 प्रतिशत) विद्यार्थियों के अनुसार विद्यालयी वातावरण का स्तर उच्च है, जबकि चयनित विद्यार्थियों में से 79 (71.17 प्रतिशत) विद्यार्थियों के अनुसार विद्यालयी वातावरण का स्तर औसत पाया गया। साथ ही 17 (15.31 प्रतिशत) विद्यार्थियों के अनुसार विद्यालयी वातावरण का स्तर निम्न पाया गया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार विद्यालयी वातावरण का स्तर औसत है। इसका कारण विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के मध्य उचित सामंजस्य का होना हो सकता है। साथ ही विद्यालय में ऐसा वातावरण हो सकता है जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक एवं विद्यालय प्रशासन के मध्य सकारात्मक अंतःक्रिया होती हो, जिसके कारण विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय में सहज स्थिति में पाते हों। विद्यालय में विद्यार्थियों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का होना, अकादमिक भार को कम करने हेतु गतिविधियों का आयोजन, मूल्यांकन में पारदर्शिता, समता एवं समानता के भाव को प्राथमिकता देना एवं विद्यालय संस्कृति भी औसत स्तर का विद्यालयी चातावरण के कारण हो सकते हैं।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना द्वितीय शोध उद्देश्य था। द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य मापनी द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। जिसे तालिका 3 में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है-

तालिका 3 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का स्तर

मानसिक स्वास्थ्य	**विद्यार्थियों की संख्या**	**प्रतिशत** (%)
उच्च स्तर	19	17.12%
औसत स्तर	76	68.47%
निम्न स्तर	16	14.41%
कुल	111	100%

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों में से 19 (17.12 प्रतिशत) विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का स्तर उच्च है, जबकि चयनित विद्यार्थियों में से 76 (68.47 प्रतिशत) विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य स्तर औसत पाया गया। साथ ही 16 (14.41 प्रतिशत) विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य का स्तर निम्न पाया गया। श्रीवास (2016) द्वारा प्राप्त शोध परिणाम वर्तमान शोध के समतुल्य है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अधिकांश विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का स्तर औसत है। इसका कारण प्रेरक एवं सहायक विद्यालयी वातावरण का होना हो सकता है। संभवतः विद्यालय उन्हें इस प्रकार का वातावरण प्रदान करता हो, जहाँ विद्यार्थी व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्व के परिप्रेक्ष्य, जैसे किसी भी स्थिति में सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो, समूह साथी के मध्य विश्वास एवं सकारात्मक अंत क्रिया, आत्मनिर्भरता, स्व पहचान आदि के साथ अकादमिक दृष्टिकोण से भी विद्यार्थियों को संबल प्रदान करता हो। साथ ही. विद्यालय का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में सजग एवं सक्रिय होता भी एक कारण हो सकता है।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव के अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना का परीक्षण प्रसरण विश्लेषण द्वारा किया गया। जिसका परिणाम तालिका 4 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 4 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य f की सार्थकता

प्रसरण स्त्रोत	**वर्गों का योग**	**स्वतंत्रांश**	**मध्यमान वर्ग**	**एफ-अनुपात ((F-Ratio)**	**सार्थकता Sig**
समूह के मध्य	18875.374	2	9437.687	140.518	.000

समूह की इकाइयों के अंतर्गत वर्गों का योग	7253.653	108	67.163		
कुल	26129.027	110			

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि F (2,108) 140.518, p=0.000<0.05 सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, निरस्त की जाती है। शून्य परिकल्पना में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव है, को स्वीकार किया जाता है। आगे यह ज्ञात करने हेतु कि किन-किन समूहों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलाकों में सार्थक अंतर है, युग्मवार परीक्षण (Post hoc test) का प्रयोग किया गया, जिसे तालिका 5 में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 5- विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तर के समूहों के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलांकों की सार्थकता

(I) विद्यालयी वातावरण स्तर	**(J) विद्यालयी वातावरण स्तर**	**मानसिक स्वास्थ्य के मध्य अंतर (I-J)**	**मानक त्रुटि**	**सार्थकता (p)**
समूह 1 (उच्च)	2 (औसत)	-24.83078*	1.93412	.000
	3 (निम्न)	-48.63922*	2.51242	.000
समूह 2 (औसत)	1 (उच्च)	24.83207*	1.93412	.000
	3 (निम्न)	-23.80715*	2.10359	.000
समूह 3 (निम्न)	1 (उच्च)	48.63922*	2.51242	.000
	2 (औसत)	23.80715*	2.10359	.000

आश्रित चार - मानसिक स्वास्थ्य

*0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 5 के पहले कॉलम (1) में तुलना किए, जाने वाला दूसरा कॉलम (J) दिया गया है। पहला समूह विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर (I) समूह है, जिसकी तुलना क्रमशः विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर तथा विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर के समूह (J) से की गई है। तालिका 5 के 'p' मान के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर के माध्य फलांकों का अंतर -24.83 है एवं सार्थकता मान 'p'=0.000<0.05 है, जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के

औसत स्तर के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलांकों में सार्थक अंतर है। विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर के माध्य फलांकों का अंतर -48.64 है एवं सार्थकता मान 'p' 0.00000.05 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः हम कह सकते हैं कि विद्यालयी बातावरण के उच्च स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलांकों में अंतर है।

दूसरा समूह विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर (I) समूह है, जिसकी तुलना क्रमशः विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर तथा विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर के समूह (J) से की गई है। तालिका 5 के 'p' मान के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर के माध्य फलांकों का अंतर -24.83 है एवं सार्थकता मान 'p' -0.000<0.05 है, जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर एवं विद्यालयों वातावरण के उच्च स्तर के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलांकों में अंतर है एवं विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर एवं विद्याल्यो वातावरण के निम्न स्तर के माध्य फलांकों का अंतर 23.80 है एवं सार्थकता मान 0.000<0.05 है. जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विद्यालयों वातावरण के औसत स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलांकों में अंतर है।

तीसरा समूह विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर (I) समूह है. जिसकी तुलना क्रमशः विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर तथा विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर के समूह (J) से की गई है। तालिका 5 के 'p' मान के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर के माध्य फलांकों का अंतर 48.64 है एवं सार्थकता मान 'p' 0.000<0.05 है, जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के उच्च स्तर के मध्य मानसिक स्वास्थ्य फलाकों में अंतर है। विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर के माध्य फलाकों का अंतर 23.81 है एवं सार्थकता मान "0.000<0.05 है, जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विद्यालयी वातावरण के निम्न स्तर एवं विद्यालयी वातावरण के औसत स्तर के माध्य मानसिक स्वास्थ्य फलाकों में अंतर है।

विद्यालयी वातावरण के तीनों स्तरों (उच्च, औसत एवं निम्न) के मध्य मानसिक स्वास्थ्य माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। इस प्रकार प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी चातावरण के विभिन्न स्तर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्था को प्रभावित करते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों को प्राप्त रचनात्मक उद्दीपन, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकार, नियंत्रण, अस्वीकार्यता एवं सहनशीलता विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। पूर्व में हुए शोध अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक होना आवश्यक है। नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है (गुप्ता, 2013)। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण एवं समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है (सिंह, 2019)। यादव (2018) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यालय के क्षेत्र में भिन्नता विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। यह शोध अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि जिस प्रकार विद्यालय के क्षेत्र में भिन्नता विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, उसी प्रकार विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

4. विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयों वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह-संबंध को अध्ययन हेतु विद्यालयी वातावरणा मापनी एवं मानसिक स्वास्थ्य मापनी द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के मध्य सह-संबंध द्वारा ज्ञात किया गया। जिसे तालिका 6 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 6- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य'r' की सार्थकता

चर	न्यादर्श (N)	स्वतंत्रांश (df)	मह-संबंध गुणांक (r)	सार्थक (P)
विद्यालयी बातावरण	111	109	0.990	.000
मानसिक स्वास्थ्य				

* 0.05 स्तर पर सह-संबंध सार्थक

तालिका 6 से ज्ञात होता है कि अवलोकित ' का मान 0.990 है, जो कि स्वतंत्राश (dt) 109 पर p=0.000<0.05 सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है, 'निरस्त की जाती है। साथ ही, विद्यालयी बातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक सह-संबंध पाया गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण अनुकूल होने पर विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक होता है एवं इसके द्वारा उनकी अधिगम क्षमता का भी विकास होगा। श्रीवास (2016) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के मानसिक रूप से स्वस्थ रहने में सर्वाधिक योगदान खुश रहना है तथा दूसरा योगदान यथार्थवादी होना है। तिवारी (2021) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यालयी वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सह-संबंध है। इस शोध अध्ययन में विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सह-संबंध पाया गया। जिसका कारण विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक अंतःक्रिया, विद्यालय का प्रकार एवं उसकी कार्यप्रणाली हो सकती है।

शोध अध्ययन के परिणाम

प्रदत्त विश्लेषण के आधार पर ज्ञात मुख्य परिणाम इस प्रकार हैं-

- अधिकांश विद्यार्थियों के अनुसार विद्यालयी बातावरण का स्तर औसत है।
- अधिकांश विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का स्तर औसत है।
- विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्वक प्रभाव है।
- विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सह-संबंध पाया गया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण अनुकूल होने पर विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक होगा और यह उनकी अधिगम क्षमता का भी विकास करेगा।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश विद्यार्थियों के विद्यालयो वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का स्तर औसत पाया गया है। इसका कारण विद्यालयी वातावरण के अंतर्गत विद्यालय का परिवेश, शिक्षक, समूह साथी, शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक अंतः क्रिया, पाठ्यचर्या, संसाधन, कक्षा-कक्ष, फर्नीचर, स्वच्छता, सौन्दर्यकरण आदि का समावेश हो सकता है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क पर पड़ता है।

इस शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि विद्यालयी वातावरण के विभिन्न स्तरों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य धनात्मक सह-संबंध पाया गया। अतः विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ घनिष्ठ संबंध है। जिसका कारण विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक अंतः क्रिया, विद्यालय का प्रकार एवं उसकी कार्यप्रणाली हो सकती है। इस प्रकार विद्यालयी वातावरण का सकारात्मक होना अत्यावश्यक है, जिससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सके।

विद्यालयी वातावरण, संस्कृति एवं मूल्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण को प्रभावित करते है। प्रशासकों एवं शिक्षकों को इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसका उल्लेख विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023, मेंटल हेल्थ एंड बैल बीइंग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स सर्वे 2022 जैसे दस्तावेजों में स्पष्ट रूप से किया गया है। मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु 'मनोदर्पण', 'परीक्षा पे चर्चा' एवं 'एक्जाम वॉरियर्स' जैसी पहल की जा रही हैं। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी विद्यार्थियों की समग्र शिक्षा हेतु उन्हें मानसिक, भावात्मक एवं क्रियात्मक रूप से सक्षम बनाने हेतु संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। यह सभी दस्तावेज, कार्यक्रम एवं पहल कहीं न कहीं विद्यार्थियों को स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवन की ओर अग्रसर करने में सहायक हैं। इस प्रकार प्रशासकों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को इन दस्तावेजों, कार्यक्रम एवं पहल का लाभ लेते हुए विद्यालय को शिक्षण अधिगम हेतु स्वस्थ स्थान बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के मुख्य परिणामों तथा निष्कर्षों के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं-

1. विद्यालय की गुणवत्ता संवर्धन में- इस शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। विद्यार्थियों में समग्रतापूर्ण सीखने का अनुभव न केवल पाठ्यक्रम सामग्री एवं शिक्षाशास्त्र में निहित है, बल्कि विद्यालयी वातावरण, अभ्यास एवं संस्कृति से भी निर्धारित होता है (विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023) विद्यालय गुणवत्ता में केवल भौतिक एवं मानव संसाधनों की उपलब्धता ही नहीं है, अपितु विद्यालय संस्कृति एवं पर्यावरण भी सम्मिलित होते हैं। इन सभी का समग्र योगदान विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव एवं विकास को आकार प्रदान करना है। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इस प्रकार विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार का वातावरण निर्मित किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में विद्यालय की सकारात्मक छवि प्रतिबिंबित हो एवं वे स्वयं विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उत्साह एवं रुचि से प्रतिभागी बनें। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उत्कृष्टता का समावेश हो सको इस हेतु विद्यालय प्रशासकों को नवाचारी पहल कर विद्यार्थियों को विद्यालय में मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सुरक्षित एवं सकारात्मक वातावरण प्रदान करना चाहिए, ताकि विद्यालय की गुणवत्ता का संवर्धन हो सके।

2. विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षकों हेतु-इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह-संबंध है। यह परिणाम विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षकों हेतु उपयोगी है। श्रीवास (2016) के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अत्यधिक उच्च स्तर पर 0.8 प्रतिशत ही विद्यार्थी मानसिक रूप से स्वस्थ हैं। मेंटल हैल्थ एंड वैल बींग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स सर्वे 2022 के अनुसार विद्यालयी गतिविधि, मूल्य, अभ्यास एवं अंतःक्रिया विद्यार्थियों के मानसिक एवं भावात्मक कल्याण हेतु अहम भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार विद्यालय प्रशासकों द्वारा विद्यालयी वातावरण को स्वस्थ एवं जीवंत बनाए रखने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे विद्यालय में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य मानव संसाधनों के मध्य सकारात्मक संबंध एवं अंतःक्रिया हो सके तथा सभी मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सकारात्मक रहे। साथ ही शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ न केवल कक्षा में अपितु कक्षा के बाहर भी उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार एवं उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए। ताकि विद्यार्थियों को

विद्यालयी वातावरण सकारात्मक लगे एवं वे स्वयं को विद्यालय में मानसिक रूप से स्वस्थ एवं समायोजित अनुभव करें तथा उनकी अकादमिक उन्नति हो सके।

3.विद्यालय में मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु गतिविधियाँ विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का आकलन उनकी अधिगम उत्सुकता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि, सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ व्यवहार से लगाया जा सकता है (साहू, 2019: तिवारी और सिंह, 2017; यादव, 2016)1 विद्यालय में 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' में मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु परामर्श पर बल दिया गया है। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इस प्रकार विद्यालय में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, जैसे परामर्शदाताओं द्वारा परामर्श सत्र, समय-समय पर भारत सरकार द्वारा प्रसारित 'मनोदर्पण', 'परीक्षा पे चर्चा' एवं 'एक्जाम वॉरियर्स' आदि कार्यक्रम का अवलोकन, अभिभावकों के साथ संवाद इत्यादि। इन गतिविधियों को किए जाने का तात्पर्य विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण का निर्माण करना है। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय वातावरण एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को परिष्कृत करने हेतु विद्यालय प्रशासन द्वारा मनोवैज्ञानिक या परामर्शदाता को नियुक्त किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपने अनुभवों एवं समस्याओं के विषय में उनसे विचार-विमर्श कर स्वस्थ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित हो सके।

संदर्भ

I. अग्रवाल, एन., ए, सत्तार और एम. जैन, 2020, पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज 8(4) पृष्ठ संख्या 173-180.

II. 2020. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सस्थागत बातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज 8(3), पृष्ठ संख्या 69-77.

III. कुमार, वी, और एच. सिंह 2020. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 6(10), पृष्ठ संख्या 679-682. 15 नवंबर 2023 को https://doi.org/10.22271/allresearch.2020.v6.110k. 7503 से प्राप्त किया गया,

IV. गुप्ता, बी. 2013: जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एड टेक्नोलॉजी 3(2), पृष्ठ संख्या 334-337.

V. जगदीश, ए, और ए. के. श्रीवास्तव, 1995. मेंटल हैल्थ इनवेंटरी. मनोवैज्ञानिक प्रकाशन संस्थान, वाराणसी.

VI. तिवारी, के. पी. और के. एस. सिंह, 2017. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट 2(5), पृष्ठ संख्या 867-870.

VII. तिवारी, के.पी. 2021. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालयी बातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का अध्ययन यूनिवर्स जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमेनिटीज 8(1). पृष्ठ संख्या 5-8.

VIII. नायक, के. पी. और पी मरकाम, 2018. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशन एंड रिसर्च 3(3), पृष्ठ संख्या 28-30.

IX. परीक्षा पे चर्चा. 2023. https://www.mygov.in/ppc-2023 से प्राप्त किया गया.

X. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार, नई दिल्ली.

XI. मिश्रा, के. एस. 2012 स्कूल एनवायरनमेंट इनवेंटरी नेशनल साइकोलोजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा

XII. मुछाल, के. एम. 2019. माध्यमिक स्तर के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. रिमार्किंग एंड एनालाइजेशन 3(12), पृष्ठ संख्या 123-129.

XIII. मेहता, एस. और एस. सिंह. 2015. माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट 2(7), पृष्ठ संख्या 80-85.

XIV. यादव, जी. 2016. मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ग्लोबल मल्टीडिसीप्लीनरी रिसर्च जर्नल. 1(1), पृष्ठ संख्या 43-47. 25 अगस्त, 2023 को https://gdsfzd.org/wp content/uploads/ 2017/10/ Chapter-14-2.pdf से प्राप्त किया गया.

XV. यादव, एस.वी. 2018. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन जर्नल ऑफ एजुकेशनल एड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 8(1), पृष्ठ संख्या 117-121. 28 अगस्त, 2023 को http://www.journalepr.com/ images/pdf/jan18/Journal-Vol-8-Jan-2018)-1-11-15 pdf से प्राप्त किया गया।

XVI. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. रा.सै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

XVII. . 2020 मनोदर्पण 17 अगस्त, 2023 को https://manodarpan education.gov.in/ से प्राप्त किया गया.

XVIII. 2022. मेटल हैल्थ एंड बैल बीइंग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स, सर्वे 2022, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 16 सितंबर 2023 को https://dsel.education.gov.in/node/2145 से प्राप्त किया गया.

XIX. 2023. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023. रा.श्री.अ.प्र.प. नई दिल्ली. 14 नवंबर 2023 को https://ncert.nic.in/pdf/ एन.सी.एफ.एस.ई. अगस्त 2023.pdf से प्राप्त किया गया,

XX. वत्स, के. जी. 2019. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइस एंड टेक्नोलॉजी 6(1), पृष्ठ संख्या 708-711. 25 अगस्त, 2023 को https://ijsrst.com/paper:9934.pdf से प्राप्त किया गया

XXI. श्रीवास, के. एस. और ए, कुमार. 2016. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, इंडियन स्ट्रॉम्स रिसर्च जर्नल. 6(11), पृष्ठ संख्या 1-5. 15 सितंबर, 2023 को http://oldisrj.lbp.world/UploadedData /9171. pdf से प्राप्त किया गया.

XXII. श्रीवास्तव, ए. 2016. विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक बित्ता पर प्रभाव एनल्स ऑफ मल्टीडिसीप्लीनेरी रिसर्च 6(2), पृष्ठ संख्या 191-195

XXIII. साहू, एम. 2019. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सह-संबंध का अध्ययन, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलोजीस एंड इनोवेटिव रिसर्च, 6(3), पृष्ठ संख्या 487-491.

XXIV. सिंह, एन. 2018. विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालयी बातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च स्टडीज, 6(8), पृष्ठ संख्या 9-12. 12 नवंबर, 2023 को https://www.csirs. org.in/uploads/paper_pdf/vidyartiyon-ke-uplabdhi-star-mein-vidyalayee-vatavaran.pdf से प्राप्त किया गया

XXV. सिंह, बी. और आर. यादव, 2019. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन का अध्ययन, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका 6 (6), पृष्ठ संख्या 32-35.

XXVI. सिंह, बी. 2017. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन, चेतना इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन. 3(2), पृष्ठ संख्या 235-242-

XXVII. शर्मा, एस. और अन्य, 2019. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, रिव्यू ऑफ रिसर्च, 8(9), पृष्ठ संख्या 1-4.

XXVIII. शक्या, पी, 2018 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-संबंध का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी. 4(2), पृष्ठ संख्या 1960-1965.

XXIX. मिश्रा, आर. और के पी वर्मा 2014 शहरी एवं ग्रामीण छात्र-छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज (2) पृष्ठ संख्या 111-113.

Contributor Details:

कमलेश यादव
शोधार्थी, शिक्षा संस्थान बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी
डॉ सुनील कुमार त्रिवेदी सह. आचार्य
शिक्षा संस्थान बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी